तुलसीदास कृत रामचरित मानस में वर्णित व्याख्यान विधि सुरुचिपूर्ण छात्र-अधिगम के लिए रामबाण

रत्ना गुप्ता*

हिंदी साहित्य के महाकवि तुलसीदास जी द्वारा रचित रामचरित मानस अवधी भाषा की एक अद्वितीय रचना है। यह ग्रंथ अपने अंदर विभिन्न नैतिक मूल्यों एवं शैक्षिक प्रत्ययों को संजोए हुए है। महाकवि तुलसीदास ने सर्वसाधारण तक अपनी बात को संप्रेषित करने के लिए प्रमुख रूप से व्याख्यान विधि को आधार बनाया है और इस व्याख्यान विधि को अनेक प्रविधियों; जैसे — कथा-कथन, तुलनात्मक प्रश्नोत्तर इत्यादि के द्वारा और भी अधिक पुष्ट किया है। आजकल व्याख्यान विधि को पुरातन कहकर नकारा जा रहा है वही व्याख्यान विधि तुलसीदास जी के वैविध्यपूर्ण प्रयोग के कारण शिक्षकों के लिए उपयोगी रही है। आज भी यदि इस तकनीक का शिक्षक सही प्रयोग करें तो वह बच्चों के अधिगम के लिए बहुत सहायक है।

हिंदी साहित्य के महाकवि तुलसीदास द्वारा विरचित रामचरित मानस, अवधी भाषा की एक अद्वितीय रचना है। यह ग्रंथ अपने अंदर विभिन्न नैतिक मूल्यों एवं शैक्षिक प्रत्ययों को संजोए हुए है। यद्यपि विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में इस ग्रंथ के कुछ अंश हिंदी विषय के अंतर्गत पढ़ाए जाते हैं। छात्र, महाकाव्य के उन अंशों का अध्ययन परीक्षा पास करने के उद्देश्य से ही करते हैं। परंतु अपने अनुपम ज्ञानकोश एवं अद्भुत प्रस्तुति तथा प्रेरक तकनीकों के कारण यह एक सार्वकालिक एवं शिक्षापरक काव्य ग्रंथ है। तुलसी का यह धर्मग्रंथ अपने अंदर कई विषयों को समाहित किए हुए है। इसमें सत्य की जीत, अहंकार का विनाश, सेवा, त्याग, वचनबद्धता आदि विषयों पर चर्चा की गई है।

तुलसीदास जी ने इन विषयों को सर्वसाधारण तक संप्रेषित करने के लिए प्रमुख रूप से व्याख्यान विधि को आधार बनाया है। लेकिन इस व्याख्यान को अनेक प्राविधियों; जैसे — कथा-कथन, तुलनात्मक प्रश्नोत्तर इत्यादि द्वारा सशक्त बनाते हुए अत्यंत सरल, सुंदर एवं प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है। शिक्षण विधियों की यह विविधता तुलसीदास जी के इस मंतव्य को प्रकट करती है कि बच्चे को जिस प्रकार से समझ में आए

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, पोस्ट ग्रेजुएट डिपार्टमेंट ऑफ़ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च, एस.एस. कॉलेज, शाहजहानपुर, उत्तर प्रदेश

उसे उसी भांति समझाया जाए और किसी भी कीमत पर अधिगम की रोचकता से समझौता न किया जाए। तुलसीदास जी का उद्देश्य उपर्युक्त समस्त विधियों के माध्यम से छात्रों को केवल तथ्यों को रटवाने के स्थान पर, कुछ नवीन खोजने और कुछ नवीन रचने की आदत का विकास करना है। अतः इन समस्त विशेषताओं को एक शिक्षक अपने छात्रों में कक्षा शिक्षण द्वारा किस प्रकार विकसित करें तुलसीदास जी ऐसे शिक्षकों के लिए आदर्श के रूप में उभरते हैं, उनका मत है कि छात्रों को जो भी तथ्य बताए जाएँ विविधता से बताए जाएँ। वे तथ्यों को छात्रों को आत्मसात करवाने के लिए तथ्यों से अधिक उनसे संबंधित उदाहरणों का भंडार छात्रों के समक्ष लगाते है—

'बिजली की चमक बादलों में नहीं ठहरती है, जैसे कि दुष्ट की प्रीति स्थिर नहीं रहती, बादल पृथ्वी पर ऐसे वर्षा कर रहे हैं जैसे कि विद्या पाकर विद्वान नम्र हो जाते हैं और बूँदों की चोट उसी तरह सहन करते हैं जैसे कि दुष्ट पुरुषों के वचन संत सहते हैं।'[1]

इस उदाहरण में तुलसीदास जी ने जिस सरलता के साथ दुर्जनों के मैत्री विषयक स्वभाव एवं विद्वान की नम्रता तथा सहनशीलता को व्यक्त किया है वह सरलता वास्तव में वर्तमान शिक्षकों के लिए एक आदर्श समान है। उन्होंने जो उदाहरण तथ्य के आत्मसातीकरण हेतु चुना वह प्रत्येक बच्चे के दिन-प्रतिदिन का साथ है। सभी ने बादलों के मध्य चमकती हुई बिजली देखी होगी, वर्षा देखी होगी परंतु इसे एक प्राकृतिक क्रिया समझकर कोई महत्व नहीं दिया, किंतु तुलसीदास जी ने इसी प्राकृतिक एवं सभी के द्वारा दर्शनीय क्रिया को दुर्जनों के मैत्री व्यवहार तथा विद्वानों की नम्रता एवं सहनशीलता को समझाने के लिए एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया।

तुलसीदास के ये उदाहरण स्वयं में अद्वितीय हैं। इनकी सर्वप्रमुख विशेषता इनकी विविधता है। उदाहरणों की इस विविधता एवं छात्रों के जीवन में सन्निकटता उन्हें तथ्यों को अपने जीवन से जोड़कर देखने के लिये प्रेरित करती है और इस दशा में उनके मस्तिष्क में तुलना करना, संबंध स्थापित करना, तर्क करना, चिंतन करना, खोज करना जैसी बौद्धिक क्षमताओं का विकास अनायास हो जाता है।

तुलसी द्वारा प्रस्तुत उदाहरणों के माध्यम से व्याख्यान देने की यह विधि वास्तव में वर्तमान शिक्षक के लिए वरदान है और शिक्षक का अत्यधिक सहयोग करती है क्योंकि यह प्रविधि शिक्षक को शिक्षण का विस्तृत क्षेत्र प्रदान करती है जिसके अंतर्गत वह अपनी प्रतिभा का विस्तार कर सकता है। वर्तमान में यह विधि प्रचलन में है, किंतु इसका उपयोग उस भाँति नहीं हो पा रहा है जैसा कि होना चाहिए। अतः ऐसी स्थिति में तुलसीदास द्वारा प्रस्तुत उदाहरण एवं उन्हें प्रस्तुत करने की शैली दोनों ही एक शिक्षक के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। एक शिक्षक इस प्रकार के उदाहरणों को अपने शिक्षण में सम्मिलित करके छात्रों का अधिकाधिक हित कर सकता है और स्वयं के शिक्षण को प्रभावपूर्ण बना सकता है।

तुलसीदास की व्याख्यान विधि की विशिष्टता इस बात में भी है कि वे समय-समय पर छात्रों के साथ प्रश्नोत्तर पर भी बल देते हैं और लगभग प्रत्येक तथ्य को संप्रेषित करने के उपरांत छात्रों से पृष्ठ पोषण भी प्राप्त करते हैं—

'सबका हित चाहने वाला क्या कभी दुखी हो सकता है? जिसके पास पारसमणि हो उसके पास क्या दरिद्रता रह सकती है? दूसरे से द्रोह करने वाला क्या निर्भय हो सकता है? और कामी क्या कभी कलंकरहित रह सकते हैं.... आत्मसात होने पर क्या आसक्तिपूर्ण कर्म हो सकते हैं? दुष्टों के संग से क्या किसी को सुबुद्धि उत्पन्न हुई है, परस्त्री गामी क्या उत्तम गति पा सकता है?... चुगुलख़ोरी के समान क्या कोई दूसरा पाप है? क्या दया के समान भी कोई दूसरा धर्म है?' [2]

प्रश्नोत्तर का यह तरीका निश्चित रूप से छात्रों को कक्षा में सजग बनाए रखने में एक शिक्षक की अत्यंत मदद करेगा। जब छात्रों से व्याख्यान के दौरान समय-समय पर छोटे-छोटे प्रश्न पूछे जाएँगे, उनकी सहमति या असहमति को जानने का प्रयास किया जायेगा तो निश्चित ही उनका संपूर्ण ध्यान शिक्षक के व्याख्यान की ओर रहेगा, ताकि कोई भी तथ्य उनसे छूटने न पाए और शिक्षक द्वारा पूछे जाने पर वे तत्काल ही उत्तर देने में समर्थ हो सकें। इस तरह के प्रश्न छात्रों के बीच और शिक्षक-छात्र के बीच विश्वास का वातावरण कक्षा में बना देते हैं। जहाँ दोनों पक्ष सरलता और सहजता से अनुभव बाँट सकते हैं तथा विवादों को न बढ़ाकर उस पर रचनात्मक प्रश्न उठाकर विचार-विमर्श करके हल प्रस्तुत करने की चेष्टा कर सकते हैं।

तुलसीदास जी कभी-कभी अपने पाठकों को छोटी-छोटी कहानियाँ भी सुनाकर व्याख्यान विषय की रोचकता बढ़ा देते हैं। कहानी, वह विधा है जो प्रत्येक छात्र के लिए आनंद का स्रोत होती है। हर कोई उसे ध्यान से सुनना चाहता है। उसमें उपस्थित किरदारों का अंर्तमन से साक्षात्कार करना चाहता है। कहानी छात्रों में कल्पनाशक्ति को जन्म देती है। उनकी सोच का विस्तार करती है, उन्हें जिज्ञासु बनाती है और जब कहानी अध्यापन का माध्यम बनती है तो अध्ययन अपेक्षाकृत अधिक स्थायी हो जाता है। तुलसीकृत रामचरित मानस में त्याग और तपस्या का महत्त्व सिखाती 'मनु और शतरुपा की कथा'[3] है, जिसमें वे हज़ारों वर्ष तपस्या करके भगवान को अपने पुत्र के रूप में प्राप्त करते हैं।

तुलसी जी की इस विधि का त्वरित प्रभाव सर्वप्रथम छात्रों के जिज्ञासा स्तर पर पड़ता है जब तुलसीदास जी नारद जी की कहानी सुनाते हैं तो उनके अंदर सर्वप्रथम यह जिज्ञासा उत्पन्न हुई होगी कि सती ने सीता रूप धारण कैसे किया होगा? इसी प्रकार भगवान विष्णु जी ने नारद जी को वानर वेश में कैसे परिवर्तित किया होगा? क्या मेरा रूप भी परिवर्तित हो सकता है? इसी प्रकार मनु और शतरुपा की कहानी छात्रों के अंदर यह जिज्ञासा उत्पन्न करेगी कि प्राचीन समय में क्या मनुष्य हज़ारों वर्षों तक जीवित रहते थे? हज़ारों वर्षों तक बिना कुछ खाये कैसे जीवित रहते होंगे? क्या मैं भी बिना खाये-पिये हज़ारों वर्षों तक जीवित रह सकता हूँ? क्या मुझे भी भूख नहीं लगेगी?

जिज्ञासा के साथ-साथ विषय के प्रति रोचकता का स्तर भी अत्यंत उच्च हो जायेगा। वह प्रतीक्षा करेगा कि शिक्षक और भी ऐसे तथ्यों को प्रस्तुत करें और ऐसी ही रोचक कहानियाँ भी सुनाएँ। जब शिक्षक अपने शिक्षण हेतु कुछ कहानियों का

आश्रय लेगा तो छात्र की कल्पनाशक्ति भी अवश्य ही जाग्रत होगी जैसाकि जब कोई छात्र सती और नारद जी की कहानी सुनेगा तो कम-से-कम एक बार कल्पना अवश्य करेगा कि यदि मेरा भी रूप परिवर्तित हो जाता तो क्या होता? क्या मेरे मित्र और माता-पिता मुझे पहचान पाते? नहीं पहचान पाते, तो क्या होता? इसी प्रकार मनु और शतरुपा की कहानी सुनकर छात्र यह कल्पना कर सकते हैं कि अगर आज भी सब लोग बिना खाये हज़ारों वर्षों तक जीवित रहते तो क्या होता? क्या उस स्थिति में किसी को कुछ करने की आवश्यकता नहीं होती? क्या माँ को खाना भी नहीं पकाना पड़ता? क्या गरीबी दूर हो जाती? क्या जनसंख्या बढ़ जाती? जनसंख्या बढ़ जाती तो लोग कहाँ रहते? और ऐसी ही न जाने कितनी अनेक कल्पनाएँ बालमन में प्रस्फुरित होंगी। यद्यपि ये कल्पनाएँ ऊपरी तौर पर व्यर्थ ही प्रतीत हो रही हैं किंतु यह कल्पनाशक्ति कहीं-न-कहीं बच्चे की सृजनात्मक क्षमता को परिपालित व पोषित अवश्य करेगी।

इसके अतिरिक्त कहानियाँ कक्षा में शोरगुल की स्थिति को भी नहीं आने देती। कहानियाँ सभी बच्चों के मन को लुभाती हैं। बस एक शिक्षक की कुशलता इसी बात में है कि वह तथ्यों के ज्ञान के साथ कहानियों को किस प्रकार जोड़े और किस प्रकार सरल एवं आकर्षक लहजे में कहानियों को प्रस्तुत करते समय छात्रों की जिज्ञासा, रुचि एवं सृजनात्मकता को पल्लवित एवं पुष्पित करे।

महाकवि तुलसीदास ने बच्चों को सदाचरण, नैतिक मूल्यों एवं शिक्षा की महत्ता से परिचित कराने के लिए व्याख्यान विधि के अंतर्गत तुलनात्मक विधि का भी प्रयोग किया है और व्यक्तित्व के सकारात्मक पक्षों की तुलना समाज के श्रेष्ठतम प्राणियों व वस्तुओं से की है तथा नकारात्मक पक्षों की तुलना समाज के निकृष्टतय प्राणियों व वस्तुओं से की है।

'संत व असंत दोनों जगत में एक साथ पैदा होते हैं पर एक साथ पैदा होने वाले कमल व जोंक की तरह उनमें गुण अलग-अलग होते हैं। कमल दर्शन एवं स्पर्श मात्र से सुख देता है, किंतु जोंक शरीर का स्पर्श पाते ही रक्त चूसने लगती है। साधु संत अमृत के समान हैं दोनों को उत्पन्न करने वाला जगत रूपी अगाध समुद्र एक ही है क्योंकि शास्त्रों में समुद्र मंथन से अमृत व मदिरा की उत्पत्ति बताई गयी है।'[4]

इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन के उदाहरण तुलसीदास जी के महाकाव्य में सर्वत्र बिखरे हुए हैं। जैसे अन्यत्र स्थान पर 'संत समाज की तुलना प्रयागराज से'[5] 'दुष्ट की तुलना मक्खी से'[6] 'कठोर वचन की तुलना वज्र से'[7] 'मूर्ख की तुलना लोहे से', विद्धान की तुलना पारसमणि''[8] से की है। जब बच्चे के समक्ष इस प्रकार का तुलनात्मक विवरण प्रस्तुत किया जायेगा तो उसका रुझान स्वतः ही सकारात्मक गुणों के अंगीकरण की ओर तत्पर होगा। जिनकी तुलना श्रेष्ठ वस्तुओं से की गई है एवं नकारात्मक गुणों को वह पूर्णतः त्याज्य समझकर उनसे विरक्त हो जायेगा। अतः बच्चे के व्यक्तित्व के नैतिक विकास की दृष्टि से यह विधि अत्यंत उपयोगी है यद्यपि ऐसे कई लेखक व कवि हैं, जिन्होंने अपने ग्रंथ में तुलनात्मक विधि का प्रयोग किया है, किंतु

तुलनात्मक विधि का जो विशिष्टतम एवं अद्वितीय प्रयोग रामचरित मानस में दृष्टिगोचर होता है वैसा प्रयोग अन्यत्र दुर्लभ है।

तुलसीदास जी की तुलनात्मक विधि की यह भी विशेषता है कि इन्होंने तुलना हेतु जो उपमान प्रयुक्त किए हैं वे किसी क्षेत्र विशेष व वस्तु विशेष या व्यक्ति विशेष से बंधे न होकर इस पृथ्वी में एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक फैले हुए हैं।

शैक्षिक दृष्टि से यह विधि स्वयं में अत्यंत महत्वपूर्ण होती है क्योंकि जब शिक्षक छात्र के समक्ष तुलना के रूप में इस पृथ्वी के प्रत्येक कोने से एकत्र किए गए उदाहरण प्रस्तुत करेंगे तो निश्चित रूप से छात्र के ज्ञान भंडार में अभूतपूर्व वृद्धि होगी और उसमें मानसिक थकावट और अरुचि जैसे लक्षण, जो कि एक स्थिति में बैठकर कोरे व्याख्यान का श्रवण करने से उत्पन्न हो जाते हैं, दूर होंगे। अतः छात्रों को ऊर्जावान बनाए रखने के लिए एक शिक्षक द्वारा किसी तुलना का सहारा लेकर कक्षा में समय-समय पर नवीन प्राण का संचार करना भी पूर्णतः प्रासंगिक है, ताकि छात्र संपूर्ण कक्षाकाल में सक्रिय रहें एवं ज्ञान के आत्मसातीकरण हेतु अधिक से अधिक प्रयत्नशील रहें।

तुलसीदास ने अपने महाकाव्य में शिक्षा से जुड़े विभिन्न आयामों पर विचार किया है, परंतु यहाँ उनमें से केवल शिक्षण विधि का उल्लेख इस आशय से किया है कि अध्यापक सीखने की प्रक्रिया में छात्रों की मदद स्वयं अपनी कक्षा में अपनाई जाने वाली शिक्षण विधियों के माध्यम से कर सकते हैं। जिससे कक्षा में उचित वातावरण का निर्माण हो व छात्र ज्ञान के सृजन के लिए प्रोत्साहित हों। आज शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक के द्वारा छात्रों को ज्ञान देने के लिए जिन विधियों का सहारा लिया जा रहा है उनमें से व्याख्यान विधि एक अत्यंत पुरातन विधि है। आज इस विधि को शिक्षक-केंद्रित समझते हुए इसके महत्त्व को पूर्णतः नकारा जा रहा है, जबकि तुलसीदास के संदर्भ में यदि हम व्याख्यान विधि को देखें तो यह विधि पूर्णतः बाल मनोविज्ञान के अनुरूप है। तुलसीदास ने जिस तकनीक से इस विधि का प्रयोग किया है, वह वर्तमान शिक्षकों के लिए प्रेरणा स्रोत है। तुलसीदास जी की यह विधि केवल कोरा व्याख्यान नहीं है वरन् विभिन्न उदाहरणों, तुलनाओं, कथा-कथन एवं प्रश्नोत्तरों का अद्भुत संगम है। साथ ही यह विधि किसी नीरस वातावरण की सृजनकर्ता भी नहीं है, बल्कि एक ऐसी ऊर्जामयी रोचक एवं ध्यानाकर्षण की प्रक्रिया है जिसका रसास्वादन छात्र को जानबूझकर नहीं करना पड़ता। वरन् अनायास ही वह कब इसकी ओर आकृष्ट हो जाता है यह वह स्वयं ही नहीं जान पाता। अतः तुलसीदास जी द्वारा प्रस्तुत व्याख्यान विधि सुरुचिपूर्ण छात्र-अधिगम के लिए रामबाण है, इसलिए पूर्णतः ग्राहय है।

टिप्पणी

पोददार, हनुमान प्रसाद (टीकाकार). 2015. *तुलसीदास कृत रामचरित मानस*, गीता प्रेस, गोरखपुर.

[1] दोहा 13, चौपाई 2, पृष्ठ 695

[2] उपरिवत, दोहा 111-ख, चौपाई 1, 2, पृष्ठ 098

[3] दोहा 141 से 152, पृष्ठ 150 –159

[4] उपरिवत, दोहा 4, चौपाई 3, पृष्ठ 26

[5] दोहा 1, चौपाई 6, पृष्ठ 21

[6] दोहा 3ख, चौपाई 2, पृष्ठ 23

[7] दोहा 2, चौपाई 6, पृष्ठ 24

[8] दोहा 2, चौपाई 4, पृष्ठ 22